International Journal of Professional Development
Vol.10,No.2,July-Dec.2021 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor: 3.115

तब्लीग़ आंदोलन और मेवात क्षेत्र

Mushtaque Ahmed
Assistant Prof., Dept. of History
Govt. College Nagina (Nuh), Haryana -122108

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में सामाजिक धार्मिक सुधारों की गतिविधियों में जहां एक तरफ परस्पर अंतर्विरोध थे वहीं दूसरी ओर इनसे धार्मिक एवं राजनैतिक ध्रुवीकरण की प्रक्रिया को बल मिला। असहयोग-खिलाफत आंदोलन की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय आंदोलन में ठहराव की स्थिति उत्पन्न हो गई और राष्ट्रीय आंदोलन कई धाराओं में विभाजित हो गया परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक राजनीति को प्रोत्साहन मिला। 1923-24 ई० में उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त, बंगाल और पंजाब में साम्प्रदायिक गतिविधियों जैसे शुद्धिकरण, मस्जिदों के सामने बाजा बजाना, धार्मिक जुलूस, नारेबाज़ी आदि से तनाव का माहौल बन गया था। शुद्धिकरण की नीति के अंतर्गत आगरा के मलकान राजपूतों का हिन्दू-मुस्लिम धर्मों में कई बार धर्मान्तरण किया गया।[1] शुद्धि आंदोलन की प्रतिक्रिया में जमीअत उल्माए हिन्द ने फरवरी 1923में इस्लाम की सुरक्षा के लिए एकजुटता एवं आवश्यक कार्यवाही करने के लिए तैयार रहने की अपील की। जमीयत ने पांच महीने के अंदर पंजाब एवं संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी जिलों में 105 शाखायें स्थापित की।[2] मुस्लिम जनता में इस्लामिक जागरुकता एवं चेतना फैलाने का निर्णय लिया गया। इसी परिप्रेक्ष्य में ख्वाजा हसन निज़ामी तथा मुहम्मद अब्दुल बारी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में तब्लीग़ को संस्थात्मक रूप देने की प्रक्रिया आरंभ की। परिणामस्वरूप जुलाई 1923 में जमीयत के नियंत्रण में 'जमीयत -तब्लीग़- उल इस्लाम' की स्थापना हुई। पंजाब में तब्लीग़ की गतिविधियों को लोकप्रिय बनाने के लिए सैय्यद गुलाम नारंग ने बढ़ चढ़कर कार्य किया। तब्लीग़ के अंतर्गत इस्लाम धर्म की शिक्षाओं प्रचार प्रसार किया गया। पवित्र कुरआन का देवनागरी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद करने के लिए चन्दा इकट्ठा किया गया ताकि आम आदमी भी कुरान की शिक्षाओं को समझ सके। इसी प्रक्रिया में हिंदुत्व संगठनों का भी पुनर्गठन किया गया। 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई। धार्मिक गतिविधियों पर अत्यधिक बल दिया गया। इसी बदलते सामाजिक परिदृश्य में मौलाना मुहम्मद इल्यास ने मेवात क्षेत्र में इस्लामिक जनजागरण के लिए तब्लीग़ की नीति अपनाई जिसने आगे चलकर एक बड़े धार्मिक आंदोलन का रूप धारण कर लिया।

तब्लीग़ की विचारधारा एवं कार्यशैली

मौलाना इल्यास की धारणा थी कि प्रत्येक महिला, पुरूष, बच्चों एवं बुजुर्गों सभी को इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं की जानकारी होनी चाहिए। मुस्लिमों को अपने दैनिक और निजी जीवन के कार्यों को शरीयत की रोशनी में करना चाहिए। उन्होंने इखलाक) नैतिक मूल्य (, मुआमिलात) माम ले (, मुआसिरात) समाज (और सियासत) राजनीति आदि चार लक्ष्यों के आधार पर सभी व्यक्तिगत एवं सामाजिक मुद्दों को हल करने पर जोर दिया।[3] तब्लीग़ की विचारधारा देवबंद मदरसा से प्रेरित थी और इसके अधिकतर निर्णय देवबंद के कुशल एवं योग्य उलेमाओं के प्रभाव में लिए जाते हैं। मौलाना इल्यास ने सुन्नी मुसलमानों में चारों स्कूलों) हनफी, शाफ़ई, हम्बली और मालिकी (के समन्वय पर बल दिया ताकि मुस्लिमों में एकता स्थापित हो सके। उन्होंने जनता और उलेमाओं के बीच बढती दूरी पर चिंता व्यक्त की और इसका निदान तब्लीग़ में खोजा। तब्लीग़ की कार्यशैली पैग़म्बर मुहम्मद के विचारों, तरीक़ों और अनुभवों के अनुरूप थी। इस्लामिक शिक्षा की प्राप्ति के लिए मकतबों एवं मदरसों की स्थापना पर बल दिया गया।मेवात में स्थानीय लोगों की मदद से रूपडाका, सिरौली, गुरालता, अलावलपुर सहित दस गांवों में मदरसों की स्थापना की गई। इन मदरसों को तब्लीग़ के मरकज़) मुख्यालय (निज़ामुद्दीन, दिल्ली के साथ जोड़ दिया गया।[5] मेवात में उच्च इस्लामिक शिक्षा प्राप्ति के लिए नूंह में मोईनुल इस्लाम मदरसा की स्थापना की गई और उसके बाद शिकरावा गांव में दारूल उलूम की स्थापना हुई।[6] मौलाना इल्यास ने तब्लीग़ के माध्यम से किसानों, मजदूरों, दस्तकारों, शिक्षित एवं अशिक्षित सभी तक इस्लाम की शिक्षाओं को पहुंचाने का कार्य किया।

तब्लीग़ के छः मौलिक सिद्धांत

मुस्लिमों में इस्लामिक आस्था को मजबूत करने के लिए छः मौलिक सिद्धान्तों का निर्धारण किया गया।

कलिमा तौहीद :इसका अर्थ है कि" ईश्वर/अल्लाह एकमात्र सर्वशक्तिमान शक्ति है और पेगम्बर मुहम्मद अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर यानी अवतार हैं। "तब्लीगी जमाअतों में कलिमा के शाब्दिक अर्थ, उसके उच्चारण तथा दर्शन आदि से लोगों को अवगत कराया जाता है।

नमाज़ :इस्लामिक नियम के अनुसार दिन-रात यानी 24 घण्टे में पांच प्रकार की नमाज अदा करने के लिए कहा गया जो कि प्रत्येक वयस्क स्त्री और पुरूष के लिए अनिवार्य हैं।

इल्म और जिक्र:इसके अंतर्गत ज्ञान प्राप्ति के लिए लोगों को प्रेरित किया गया। प्रत्येक व्यक्ति को इतना ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए कि वह सही और गलत के बीच के अंतर को समझ सके। प्रत्येक व्यक्ति को इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं की जानकारी होनी चाहिए।

एकराम-ए-मुस्लिम :सभी मुस्लिम परस्पर भाई भाई हैं और एकसमान हैं। सभी बच्चे, स्त्री, पुरुष, गरीब, अमीर, अपाहिज और बुजुर्ग के प्रति सम्मान और आदर का व्यवहार करना चाहिए।इस्लामिक हदीस में कहा गया है कि अल्लाह उनकी मदद करते हैं जो उसके बन्दो/लोगों की मदद करते हैं।[17]

इख्लास-ए-नियत:व्यक्ति के विचारों में पवित्रता, सादगी और सच्चाई होनी चाहिए। उसे आडम्बरों और पाखंड से दूर रहना चाहिए। अति भौतिकतावाद और दिखावा व्यक्ति को दिग्भ्रमित कर देते हैं। व्यक्ति की सही नियत/सोच ही उसको सही दिशा दे सकती है।

तफ़रीग-ए-वक्त :प्रत्येक मुस्लिम को अपने व्यस्त दैनिक जीवन में से कुछ समय इस्लामिक शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार में अवश्य लगाना चाहिए। इसके लिए तब्लीग़ का माध्यम अपनाना चाहिए। इससे मुस्लिमों में परस्पर विचारों का आदान प्रदान होगा और उनमें धार्मिक चेतना का विकास होगा।

उपरोक्त छः सिद्धान्तों के अतिरिक्त तर्क- ए- लायानी सिद्धांत का भी प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है कि हमें बेकार, बेवज़ह और फिज़ूल की बातों में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए बल्कि अपने समय को धार्मिक साहित्य के अध्ययन, जिक्र और उलेमाओं की संगत में गुजारना चाहिए।

तब्लीग़ जमाअत और अन्य मुस्लिम विचारधाराएं : मुस्लिम समुदाय तब्लीग़ जमाअत की कार्यशैली और विचारों से सहमत नहीं हैं। बरेलवी) अहल- ए- सुन्नत (तब्लीग़ की आलोचना करते हैं क्योंकि तब्लीग़ में उनकी कुछ मान्यताओं को गलत माना गया है जैसे सूफ़ी सन्तों की मजारों पर चादर चढ़ाना, उन पर दिए जलाना तथा उनसे मन्नत मांगना। अहल - ए -हदीस का तब्लीग़ के साथ बड़ा टकराव नहीं है फिर भी उनका आरोप है कि तब्लीग़ जमाअत ने स्वयं कुछ नियम बना लिए हैं जो कि गलत है। उन्होंने मौलाना जकरिया द्वारा संकलित हदीस ग्रन्थ "फजाईल -ए -आमाल "को सर्वोच्च हदीस हदीस ग्रन्थ घोषित करने की आलोचना की है। उनका मानना है कि हमें अन्य हदीस की क़िताबों का भी अध्ययन करना चाहिए। जमाअत- ए -इस्लामी ने आलोचना की है कि तब्लीग़ के छः मौलिक सिद्धान्तों में इस्लाम के पांच स्तम्भ जैसे कलिमा, नमाज,रोज़ा, जकात और हज को पूरी तरह शामिल नहीं किया गया है। इनका मानना है कि" फजाईल -ए - आमाल "के अतिरिक्त अन्य हदीस ग्रन्थों को भी महत्व देना चाहिए।

मेवात क्षेत्र में तब्लीग़ :मेवात में तब्लीगी कार्य शुरू करने का इतिहास मौलाना इल्यास के पिता मौलाना इस्माइल से जुड़ा हुआ है। उन्होंने मेवात के मजदूरों और उनके बच्चों के लिए निज़ामुद्दीन, दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की थी।[18] इससे मेवों का निज़ामुद्दीन के साथ हमेशा के लिए सम्बन्ध स्थापित हो गया। मौलाना इल्यास ने मेव समाज में प्रचलित रूढ़िवाद, अंधविश्वास और गैर इस्लामिक मान्यताओं को समाप्त करने के लिए प्रयास शुरू किए परिणामस्वरूप मेवात में मकतब, मदरसा, खुले स्थान और छायांदार पेड़ों के नीचे धार्मिक शिक्षा दी जाने लगी। मौलाना इल्यास ने मेवात में तब्लीग़ जमाअत गठन किया।शुरुआत में इसका विरोध हुआ लेकिन उनकीदृढ़ इच्छाशक्ति और ठोस रणनीति जमाअतों का सिलसिला सफलतापूर्वक शुरू हुआ। मेवात में प्रत्येक पाँच किलोमीटर की दूरी पर जमाअत भेजी गई। फ़िरोज़पुर झिरका के गांव चितौड़ा में एक विशाल जलसा का आयोजन किया गया। मौलाना इल्यास को मेवात क्षेत्र अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हो गई। मेवों ने उन्हें" हज़रत जी " की उपाधि प्रदान की। उनके विचारों को सुनने के लिए जनता भारी संख्या में उमड़ पड़ती थी। मौलाना इल्यास ने तब्लीग़ के प्रचार प्रसार के लिए मेव पंचायतों को भी माध्यम बनाया। 1938 ई0 में उन्होंने दिल्ली, सहारनपुर, देवबंद, मिर्ज़ापुर और बुलंदशहर आदि शहरों में मेवात की जमाअतों को भेजा ताकि मेवों का सम्पर्क मुस्लिम उलेमाओं तथा अन्य मुस्लिम जनता के साथ हो सके। मौलाना इल्यास के पुत्र मुहम्मद यूसुफ के समय तब्लीग़ का एक राष्ट्रीय नेटवर्क स्थापित हो गया और तब्लीग़ ने

एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप धारण कर लिया। उन्होंने स्वयं उत्तर भारत विशेषकर उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों की यात्रा की और भारत से बाहर मुस्लिम देशों में तब्लीग़ जमाअत का कार्य शुरू किया।[9] मौलाना यूसुफ ने महिलाओं की धार्मिक शिक्षा पर भी बल दिया। साथ ही उन्होंने मेव समुदाय की महिलाओं से अपील की कि वे अपने परिवार में पुरुषों को जमाअत में भेजने के लिए प्रेरित करें।[10]

भारत के विभाजन की त्रासदी में साम्प्रदायिक हिंसा के दौरान मुस्लिम समुदाय में असुरक्षा की भावना व्याप्त थी। साम्प्रदायिक हिंसा से पीड़ित मेव समुदाय के राहत एवं पुनर्वास के लिए तब्लीग़ कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण कार्य किया। इस त्रासदी से मेव समुदाय के स्वाभिमान को ठेस पहुंची थी परिणामस्वरूप उनमें "इस्लामिक प्रतिबद्धता "की भावना को बल मिला।[11] सदियों से चली आ रही संयुक्त सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था का लाभ मेवों को नहीं मिला बल्कि मेवों एक वर्ग इस प्रचलित व्यवस्था से मोह भंग हो गया और उनका अधिक झुकाव इस्लामीकरण की ओर हो गया।[12] विभाजन के पश्चात मौलाना यूसुफ ने पाकिस्तान की यात्रा की और लाहौर में मेव शरणार्थियों से मुलाकात की। विभाजन की त्रासदी में तब्लीग़ को मेव समुदाय का नैतिक समर्थन प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के बाद तब्लीग़ का अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क स्थापित हुआ। मेवात क्षेत्र तब्लीग़ के कारण इस्लामिक दुनिया में श्रद्धा का केंद्र बन गया। इसलिए कुछ विद्वान तब्लीग़ को" मेवों में धार्मिक पुनरुत्थान"के रूप में देखते हैं।[13]

तब्लीग़ आंदोलन, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अंदर व्याप्त अंतर्द्वंद्व तथा पेचीदगियों को भी दर्शाता है। तब्लीग़ यद्यपि एक धार्मिक आंदोलन था लेकिन कभी भी इसकी विचारधारा का टकराव भारतीय राष्ट्रवाद के साथ नहीं हुआ।[14] तब्लीग़ की प्रक्रिया भारतीय राष्ट्रवाद के साथ पुष्पित और पल्लवित हुई। यह आंदोलन अपने धार्मिक उद्देश्यों में ही सफल नहीं रहा बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद के साथ भी अपना तालमेल स्थापित करने में सफल हुआ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य: मेवात क्षेत्र में तब्लीग़ आंदोलन की सफलता और उसकी गतिविधियों के व्यापक प्रभाव देखे जा सकते हैं। मेव समुदाय में इस्लामीकरण की गतिविधियों के साथ साथ प्राचीन काल से चली आ रही संयुक्त संस्कृति के मूल्य आज भी अक्षुण्ण बने हुए हैं। आज भी यहाँ गोत्र व्यवस्था के अनुसार विवाह किए जाते हैं। मेव समुदाय ने जहां एक तरफ तब्लीग़ के प्रभाव में देवबंदी विचारधारा को अपनाया है वहीं दूसरी ओर मेवों में अपनी परम्परागत पहचान को बनाए रखने की भी चिंता है जिससे उनके समक्ष दुविधा की स्थिति उत्पन्न होती है।[15] यह समाज निरन्तरता और परिवर्तनके दौर से गुजर रहा है। आज मेव समाज का शिक्षित मध्य वर्ग तब्लीग़ के परंपरागत तरीकों में परिवर्तन का पक्षधर है। उनका मानना है कि तब्लीग़ द्वारा आधुनिक शिक्षा की जरूरत को भी स्वीकार किया जाना चाहिए। शिक्षा को आधुनिक और सांसारिक दो वर्गों में विभाजित कर दिया गया है जो कि उचित नहीं है। मदरसों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता है। उनमें धार्मिक शिक्षा के साथ साथ कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा कंप्यूटर आदि विषयों का भी अध्ययन किया जाना चाहिए। इससे मेव समुदाय में आधुनिक युग के साथ आगे बढ़ने की क्षमता का विकास होगा और यह मुख्यधारा के साथ जुड़ सकेगा।[16] मेवात के युवा वर्ग का मानना है कि मेवात क्षेत्र में शिक्षा तथा मूलभूत सुविधाओं की कमी है जिसके कारण यह क्षेत्र भारत के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में शामिल किया जाता है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। तब्लीग़ के माध्यम से यह संदेश दिया जाना चाहिए कि मेव समुदाय अपने लड़के और लड़कियों को आधुनिक स्कूलों, कॉलेजों तथा अन्य संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजे ताकि यहाँ के पिछड़ेपन को भी दूर किया जा सके। तब्लीग़ में धार्मिक और आधुनिक मूल्यों के समावेश की जरूरत है। मौलाना मुहम्मद इल्यास द्वारा मेवात में की गई मेहनत को सही तरीके से आगे बढ़ाने की जरूरत है। बढ़ती सामाजिक समस्याओं जैसे दहेज, नशाखोरी,जुआखोरी, आपसी मनमुटाव आदि विभिन्न मामलात पर भी गौर करने की सख्त जरूरत है।तब्लीग़ के माध्यम से लोगों को सही राह पर चलने की प्रेरणा मिली थी जिसके कारण इसे पूरी दुनिया में प्रसिद्धी प्राप्त हुई है अतः तब्लीग़ के माध्यम से ही बड़े स्तर पर सामाजिक परिवर्तन किया जा सकता है।[17] तब्लीग़ आंदोलन सामाजिक परिवर्तन का भी प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार तब्लीग़ की प्रक्रिया में, आरम्भ से लेकर वर्तमान समय तक इस्लामीकरण, राष्ट्रवाद तथा आधुनिक मुल्यों के बीच अंतर्क्रिया चल रही है।

संदर्भ

1. मुशीरुल हसन, "नेसलेलिज्म एंड कम्यूनल पॉलिटिकल इन इंडिया 1885-1928", मनोहर, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 233.

2. योगिंदर सिकंद, "ओरिजिन्स एंड डेवलोपमेन्ट ऑफ तब्लीग़ जमाअत मूवमेंट 1920-2000", लाँगमेंन पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 61.
3. एस .ए .हक़, "दि फेथ मूवमेंट ऑफ मौलाना मुहम्मद इल्यास", जॉर्ज एलन एंड उर्विन, लंदन,1972, पृष्ठ 89.
4. योगिंदर सिकंद, ओरिजिन्स.....पृष्ठ 69.
5. चिराग- ए -मेवात, "तब्लीग़ आंदोलन और मेवात", नवंबर 1998, पृष्ठ 6
6. मौलाना हकीम अब्दुल शकूर, "तारीख मेव क्षत्रिय", मेव हाई स्कूल नूंह, 1974, पृष्ठ 417.
7. मुहम्मद ईशा फ़िरोज़पुरी) उर्दू(, तब्लीग़ तहरीक की इब्तिदा और उसके बुनियादी उसूल", रब्बानी बुक डिपो, दिल्ली, पृष्ठ 77.
8. एम .एस .ए .राव,(सम्पादित" (सोशल मूवमेंट इन इंडिया", मनोहर, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 309.
9. शैल मायाराम, रेसिस्टिंग रिजिम्स :दि मिथ मेमोरी एंड शेपिंग ए मुस्लिम आइडेंटिटी, ओ.यू.पी., दिल्ली, 1977, पृष्ठ 233.
10. मौलाना मुहम्मद थानी हसनी) उर्दू(, "स्वानिह मौलाना यूसुफ कन्धालवी) "मौलाना यूसुफ की जीवनी(, दारुल उलूम लखनऊ, पृष्ठ 762.
11. पी .सी .अग्रवाल, "इस्लामिक रिवाइवल इन मॉडर्न इंडिया :दि केस ऑफ मेवोस", ई .पी. डब्ल्यू .18 अक्टूबर 1969, पृष्ठ 1677-81.
12. पी .सी .अग्रवाल, "ए मुस्लिम सब-कास्ट इन नॉर्थ इंडिया -प्रॉब्लम ऑफ कल्चरल इंटीग्रेशन", ई. पी. डब्ल्यू .1966, पृष्ठ 1677-81.
13. एम. एच. सिद्दीकी, "हिस्ट्री एंड सोसाइटी इन ए पॉपुलर रिबेलियन इन मेवात", 1920-33, सी .एस .एस. एच., 1986, पृष्ठ 433.
14. ज़ाकिर हुसैन, साक्षात्कार, फ़िरोज़पुर झिरका) नूंह, हरियाणा (, 4 नवंबर 2021.
15. शैल मायाराम," रेसिस्टिंग रिजिम्स .....पृष्ठ 263.
16. नसीर अहमद पटवारी, साक्षात्कार, उदधृत, एम . फिल थीसिस ऑफ श्री मुश्ताक अहमद, "सेल्फ एंड दि नेशन :मेवोस इन पोलिटिकल प्रोसीसेसीस 1920-47", जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 86.
17. शौकत हुसैन, साक्षात्कार, नगीना) नूंह, हरियाणा (, 12 दिसम्बर 2020.

www.ijpd.co.in